

क्षेप पुं. (तत्.) 1. फेंकने तथा उछालने का कार्य 2. भेजना, गिराना 3. हिलाना 4. बिताना 5. आघात 6. विलंब 7. निंदा 8. अपमान 9. आक्षेप 10. दर्प 11. लेपन 12. पुष्पगुच्छ 13. नाव की डाँड खेना।

क्षेपक वि. (तत्.) 1. फेंकने वाला 2. मिलाया हुआ, मिश्रित 3. निंदनीय, अपमानजनक पुं. (तत्.) 1. केवट, मल्लाह 2. कर्णधार 3. पुस्तकादि में पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण पुं. (तत्.) 1. फेंकना, गिरना 2. बिताना, गुजरना 3. अपवाद, निंदा 4. आक्षेप करना 5. फेंकने का साधन (गोफन, ढेलवांस आदि)।

क्षेपणि स्त्री. (तत्.) 1. चप्पू, डाँड 2. मछली पकड़ने का जाल 3. गोफन 4. गुलेल।

क्षेपणिक पुं. (तत्.) 1. मल्लाह, केवट, नाव या जहाज चलाने वाला 2. नाविक।

क्षेपणीय वि. (तत्.) फेंकने योग्य, जो फेंका जा सके (ढेला आदि)।

क्षेप्ता वि. (तत्.) 1. फेंकनेवाला, क्षेपण करने वाला 2. तिरस्कार करने वाला।

क्षेप्य वि. (तत्.) 1. फेंकने योग्य 2. नष्ट करने योग्य 3. रखने योग्य, भीतर रखने योग्य 4. जोड़ने योग्य।

क्षेप्यास्त्र पुं. (तत्.) अस्त्र जो मंत्र की सहायता से बहुत दूर तक प्रेषित किया जा सके, मिसाइल।

क्षेमंकर वि. (तत्.) शुभ या मंगल करने वाला, हितावह, कल्याणकर।

क्षेमंकरी स्त्री. (तत्.) 1. एक प्रकार की चील, जिसका गला सफेद होता है 2. एक देवी का नाम।

क्षेम पुं. (तत्.) 1. कुशल, मंगल, कल्याण 2. सुरक्षा, प्राप्त वस्तु की रक्षा 3. अभ्युदय 4. सुख, आनंद 5. मुक्ति 6. फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म के नक्षत्र से चौथा नक्षत्र 7. विश्राम का स्थान 8. समृद्धि वि. (तत्.) 1. सुखी, आनंदयुक्त 2. कल्याणकर 3. सुरक्षित 4. श्रेयस्कर।

क्षेमक पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का गंध द्रव्य 2. लक्षद्वीप का एक खंड 3. शिव का एक अनुचर 4. एक राक्षस का नाम 5. परीक्षित का अंतिम वचन।

क्षेमकर्ण पुं. (तत्.) अर्जुन के पौत्र का नाम, जो जनमेजय का सखा था।

क्षेत्रकल्याण पुं. (तत्.) हम्मीर और कल्याण के योग से बना हुआ एक संकर राग, एक संगीत।

क्षेमकारी स्त्री. (तत्.) दुर्गा का एक रूप।

क्षेमफला स्त्री. (तत्.) गूलर, उदुंबर।

क्षेमरात्रि स्त्री. (तत्.) वह रात जिसमें चोरी, हत्या आदि न हुई हो (कौटिल्य)।

क्षेमवृत्ति स्त्री. (तत्.) वर्तमान स्थिति, व्यवस्था बनाए रखने का भाव, परिवर्तन-भीरुता।

क्षेमा स्त्री. (तत्.) 1. कात्ययिनी का एक नाम 2. एक अप्सरा 3. दुर्गा।

क्षेमासन पुं. (तत्.) एक प्रकार का आसन, तंत्र के अनुसार इस आसन में दाहिने हाथ पर दाहिना पैर रखकर बैठते हैं। इस आसन से उपासना करने से स्वर्ग की प्राप्ति होती है।

क्षेमी वि. (तत्.) 1. क्षेमयुक्त, सुरक्षित, निरापद 2. क्षेम चाहने वाला 3. मंगलकारक, शुभदायक, कुशल चाहने वाला।

क्षेमेंद्र पुं. (तत्.) संस्कृत के एक प्रसिद्ध कश्मीरी साहित्यकार।

क्षेम्य पुं. (तत्.) 1. शिव 2. विश्राम वि. (तत्.) 1. शांतिदायक 2. कल्याणकर, हितकर 3. स्वास्थ्यकर 4. भाग्यवान 5. मंगलदायक।

क्षेम्या स्त्री. (तत्.) दुर्गा।

क्षेय वि. (तत्.) क्षय, नाश करने योग्य।

क्षेय्य पुं. (तत्.) क्षीणता, दुबलापन, क्षय।

क्षेत्र पुं. (तत्.) क्षीणता, दुबलापन, क्षय।

क्षेत्र पुं. (तत्.) क्षेत्र-समूह, खेतों का समूह, खेत।

क्षेत्रज्ञ पुं. (तत्.) आत्मज्ञानी, तत्त्वज्ञानी।

क्षैप्र पुं. (तत्.) 1. क्षिप्रता, त्वरा, श्री, धृता 2. व्याकरण में एक प्रकार की स्वरसंधि।

क्षैरेय वि. (तत्.) दूध से बना हुआ।